44

''यहूदी समस्या''

(9:1-13)

इस पाठ के साथ हम रोमियों के नाम पत्र के दूसरे भाग का अध्ययन आरम्भ करते हैं। पुस्तक की हमारी रूपरेखा में पहले आठ पाठ ''डॉक्ट्रिनल'' भाग तथा अन्तिम आठ ''व्यावहारिक'' भाग के रूप में बनाए गए हैं। व्यावहारिक भाग को दो भागों ''व्याख्या'' (अध्याय 9-11) और ''प्रासंगिकता'' (अध्याय 12 से आरम्भ करते हुए) में बांटा गया है। (इस पुस्तक में आगे ''रोमियों की एक रूपरेखा'' देखें।) हमारी शृंखला के अगले कई पाठ ''व्याख्या'' वाले भाग पर केन्द्रित होंगे। हम पौलुस की व्याख्या को देखेंगे जिसे जिम मैक्गुइगन ने ''यहूदी समस्या'' का नाम दिया है[1]: किस प्रकार विश्वास से धर्मी ठहराए जाने की शिक्षा (डॉक्ट्रिन) सीनै पर्वत पर यहूदियों के साथ बान्धी गई परमेश्वर की वाचा से जुड़ी है।

अध्याय 9 से 11 के कुछ भाग समझने आसान नहीं हैं। टॉम राइट ने कहा है, ''रोमियों 9-11 समस्याओं से वैसे ही भरा है, जैसे बाड़ की झाड़ियां कांटों से।''[2] डी. मार्टिन लायर्ड-जोन्स ने लिखा है, ''आरम्भ में 'सुसमाचार' के आठ अध्यायों, अन्त में 'प्रासंगिकता' के चार और बीच में पहेली के तीन अध्यायों वाली रोमियों की पुस्तक को छोड़ते हुए कइयों ने इसे कठिन काम कहकर छोड़ दिया है।''[3]

ये अध्याय इतने कठिन क्यों हैं? कई कारण दिए जा सकते हैं। पहला तो यह कि उनमें पहली सदी की समस्या है, जो आज हमारे बीच में नहीं है। दूसरा यह कि पौलुस ने समस्या के समाधान का ढंग वह नहीं अपनाया, जो मैं या आप अपना सकते हैं। अधिकतर समय उसने अपने साथी यहूदियों की सोच वाला ढंग अपनाने का तरीका बनाया।

इसके उलझन वाला भाग होने का एक और कारण यह है कि इसका इस्तेमाल गलत शिक्षा देने के लिए किया गया है। कई साल तक यह पूर्वज्ञान, पूर्व निर्धारण और चयन पर वचनों के लिए कैल्विनवादियों का पसंदीदा स्रोत रहा है। फिर हाल ही के समयों में हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वाले (प्रीमिलेनियलिस्टों) द्वारा ''संसार के अन्त'' के अपने दृश्य के भाग के रूप में इन्हें जोड़ा गया है। उनके लिए रोमियों 11:26 के ये शब्द विशेष दिलचस्पी वाले हैं: ''और इस रीति से सारा इस्राएल उद्धार पाएगा।'' वे यह सिखाते हैं कि संसार के अन्त के निकट एक निश्चित समय में, सब यहूदी यीशु को मसीहा मान लेंगे।

अन्त में यह चुनौतीपूर्ण भाग है क्योंकि, यह अध्याय मुख्यतया पहली सदी की समस्या से जुड़े हैं, इसलिए यह देख पाना हमेशा आसान नहीं है कि हमारे ऊपर कैसे लागू होते हैं। (कहा गया है कि पौलुस रोमियों 8 के साथ रोमियों 12 को मान सकता था और हम 9 से 11 अध्यायों को कभी न खोते।) तौ भी प्रभु ने रोमियों 9-11 को संभाल कर रखा है, जिस कारण पौलुस का संदेश पूरे मसीही युग के लिए ही होगा। अध्यायों का अध्ययन करते हुए हमारे लिए एक चुनौती यह पता लगाना होगी कि परमेश्वर *हमसे* क्या चाहता है कि हम सीखें।

इस पाठ में पहले वचन पाठ पर चर्चा होगी और फिर इन आयतों में शामिल समयहीन सच्चाइयों पर ध्यान दिलाया जाएगा। पाठ में अध्याय 9 की पहली तेरह आयतें ली जाएंगी और उन्हें रोमियों के अध्ययन के इस नए पड़ाव के परिचय के रूप में इस्तेमाल किया जाएगा।

प्रभावी वचन (9:1-13)

पौलुस का दुःख (आयतें 1-5)

आत्मा की अगुआई में पौलुस ने अपने साथी यहूदियों से विनती करने के लिए बड़ी सावधानी से अध्याय 9 तैयार किया। उसने उनके लिए प्रेम और लगाव व्यक्त करते हुए आरम्भ किया। पौलुस पहले अध्यायों में कह रहा था कि लोग व्यवस्था को पूरा करने या खतना करने से धर्मी नहीं ठहराए जाते। उसे अहसास हुआ कि वह अपने ही लोगों के द्रोही के रूप में जाना जाएगा, परन्तु यह आरोप झूठा था। बेशक, पौलुस को परमेश्वर द्वारा दी गई सेवकाई अन्य जातियों के लिए थी (देखें रोमियों 11:13; प्रेरितों 9:15; गलातियों 2:9), परन्तु अपने देशवासियों के लिए उसकी चिन्ता भी उतनी ही थी। जब भी वह किसी नई जगह जाता, अन्यजातियों के पास जाने से पहले यहूदियों के साथ सुसमाचार बांटता (देखें प्रेरितों 13:14, 46)। रोमियों के नाम अपने मुख्य वाक्य में उसने कहा कि सुसमाचार ''पहले यहूदियों'' के लिए था (1:16)। यहां उसने कहा:

> मैं मसीह में सच कहता हूं, झूठ नहीं बोलता और मेरा विवेक भी पवित्र आत्मा में गवाही देता है। कि मुझे बड़ा शोक है, और मेरा मन सदा दुखता रहता है। क्योंकि मैं यहां तक चाहता था, कि अपने भाइयों के लिए जो शरीर के भाव से मेरे कुटुम्बी हैं, आप ही मसीह से शापित हो जाता (9:1-3)।

इस वाक्य का आरम्भ एक मजबूत पुष्टि के साथ होता है कि पौलुस जो कहने जा रहा था, वह सच था ''मैं मसीह में सच कहता हूं, झूठ नहीं बोलता और मेरा विवेक भी[4] पवित्र आत्मा में गवाही देता है'' (आयत 1)। ''मसीह में'' और ''पवित्र आत्मा में'' वाक्यांशों से पता चलता है कि पौलुस को अहसास था कि वह परमेश्वरत्व के इन दो व्यक्तियों के सामने खड़ा है और सच्चाई न बोलने पर उसे उन्हें जवाब देना पड़ेगा।[5]

जो सच्चाई पौलुस बताना चाहता था वह यह है, ''कि मुझे बड़ा शोक है, और मेरा मन सदा दुखता रहता है'' (आयत 2)। किस बात ने उसे इतनी ज़बर्दस्त उदासी से भर दिया? आगे की चर्चा से संकेत मिलता है कि उसके अधिकतर यहूदी साथियों ने यीशु को मसीहा के रूप में नकार दिया था, इस कारण खोए हुए थे। अध्याय 10 में उसने कहा कि यहूदियों के लिए उसके ''मन की अभिलाषा और उनके लिए परमेश्वर से ... प्रार्थना है, कि वे उद्धार पाएं'' (आयत 1)।

पौलुस का लगाव कितना महान था? आयत 3 में उसकी चौंकाने वाली बात सुनें: ''क्योंकि मैं यहां तक चाहता था, कि अपने भाइयों के लिए जो शरीर के भाव से मेरे कुटुम्बी हैं, आप ही मसीह से शापित हो जाता।'' ''शापित'' का अनुवाद *anathema* से किया गया है। ''पौलुस शापित चीज़ के लिए इस शब्द का इस्तेमाल करता है। ... विचार परमेश्वर के न्यायिक क्रोध को सौंप देने का है।''[6] *Anathema* शब्द के सम्बन्ध में डग्लस जे. मू ने लिखा है, ''नये नियम में यह उस व्यक्ति के लिए इस्तेमाल होता है जिसे परमेश्वर के लोगों में से निकाला गया और दण्ड दिया

जाने वाला हो (देखें 1 कुरिन्थियों 12:3; 16:22; गलातियों 1:8-9)।''[7]

बेशक पौलुस के लिए अपने यहूदी साथियों की जगह शापित होना सम्भव *नहीं* था। अध्याय 14 में उसने कहा, ''सो हम में से हर एक परमेश्वर को अपना-अपना लेखा देगा'' (आयत 12)। पौलुस यह कह रहा था कि *यदि* सम्भव होता और *यदि* परमेश्वर की इच्छा के अनुसार होता तो अपने यहूदी भाइयों को बचाने के लिए वह यहां तक जाने को तैयार था। इस्राएलियों द्वारा सोने का बछड़ा बनाकर परमेश्वर का क्रोध भड़काने के बाद मूसा की विनती हमें उसके लगाव को याद दिलाती है।[8] ''हाय-हाय, उन लोगों ने अपने लिए सोने का देवता बनवाकर बड़ा ही पाप किया है। तौ भी अब तू उनका पाप क्षमा कर नहीं तो अपनी लिखी हुई पुस्तक में से मेरे नाम को काट दे'' (निर्गमन 32:31, 32)।[9] मूसा ने प्रार्थना की कि ''यदि तू मेरे इस्राएली साथियों को दण्ड देता है तो मुझे *भी* दण्ड दे,'' जबकि पौलुस ने अपने यहूदी साथियों की *जगह* दण्ड दिए जाने की प्रार्थना की। दोनों ही मामलों में हमें गहरे लगाव और घनिष्ठ प्रेम की अभिव्यक्यिां मिलती हैं।

रोमियों 9:3 में इन शब्दों पर ध्यान दें: ''अपने भाइयों के लिए जो शरीर के भाव से मेरे कुटुम्बी हैं।'' आमतौर पर पौलुस ''भाइयों'' शब्द का इस्तेमाल मसीही साथियों के लिए करता था (उदाहरण के लिए, देखें 1:13; 12:1; 15:30); परन्तु यहां उसने यह शब्द यहूदी साथियों पर लागू किया। वह यहूदी लोगों के साथ अपने सम्बन्ध पर ज़ोर देना चाहता था, जो उसके ''अपना मांस और लहू'' थे (9:2; TEV)। आत्मिक तौर पर वह मसीही था, जबकि राष्ट्रीय तौर पर वह अभी भी यहूदी था (मैं एक मसीही हूं, परन्तु इससे यह तथ्य बदल नहीं जाता कि मैं रोपर परिवार का भी एक भाग हूं और अमेरिका का नागरिक हूं।)

पौलुस ने अपने ''भाइयों'' के बाद ''शरीर के भाव से कुटुम्बियों'' से बात की, यहूदी कौम पर परमेश्वर द्वारा दी गई आशिषों का सार बताते हुए। पहले उसने पूछा था, ''सो यहूदी की क्या बड़ाई?'' (3:1क)। अपने ही प्रश्न का उत्तर उसने यह कहकर दिया था, ''हर प्रकार से बहुत कुछ''; परन्तु उस समय बताया गया केवल एक ही लाभ यह था कि उन्हें ''परमेश्वर के वचन सौंपे गए'' थे (आयत 2)। अब उसने सूची को बढ़ा दिया। 9:4, 5 में उसकी सूची में यहूदियों को दी गई परमेश्वर की नौ आशिषें हैं:

> वे इस्राएली हैं; और लेपालकपन का हक्क और महिमा और वाचाएं और व्यवस्था और उपासना और प्रतिज्ञाएं उन्हीं की हैं। पुरखे भी उन्हीं के हैं, और मसीह भी शरीर के भाव से उन्हीं में से हुआ, जो सब के ऊपर परम परमेश्वर युगानुयुग धन्य है। आमीन।

(1) *''इस्राएली।''* पौलुस ने पहले कहा, ''इस्राएली कौन हैं।'' स्वर्गदूत के साथ लड़ाई करने के बाद याकूब का नाम बदलकर ''इस्राएल'' रख दिया गया था (उत्पत्ति 32:28) जिसका अर्थ है ''परमेश्वर जीवित है'' या ''जो परमेश्वर के साथ जीवित है।''[10] ''इस्राएली'' शब्द का इस्तेमाल इस्राएल/याकूब की सन्तान के लिए किया जाता था और यहूदियों के लिए इसका विशेष महत्व था। ''अन्तरनियमीय नियमों के दिए जाने के काल के दौरान और बाद में [नये नियम] के समयों में पलिश्ती यहूदी इस शीर्षक का इस्तेमाल यह संकेत देने के लिए करते थे कि वे परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं।''[11] (रोमियों के पहले आठ अध्यायों में पौलुस ने आमतौर पर ''यहूदी'' और ''यहूदियों'' शब्दों का इस्तेमाल किया; परन्तु अध्याय 9 से 11 में उसने मुख्यतया ''इस्राएल'' और

''इस्राएली'' शब्दों का इस्तेमाल किया।)

(2) *''लेपालक।''* फिर पौलुस ने कहा, ''लेपालकपन का हक'' उन्हें दिया गया है। ''लेपालकपन'' शब्द इस बात पर ज़ोर देता है कि परमेश्वर ने इस्राएल जाति में से अपने पुत्र और पुत्रियां होने के लिए लोगों को *चुन लिया* था (देखें निर्गमन 4:22; होशे 11:1)।[12] उसने मिस्र, बाबुल या अश्शूर जैसी किसी शक्तिशाली कौम को नहीं, बल्कि छोटे से इस्राएल को चुना था। उसने इस्राएलियों से कहा, ''पृथ्वी के सारे कुलों में से मैं ने केवल तुम्हीं पर मन लगाया है'' (आमोस 3:2क)।

(3) *''महिमा।''* फिर पौलुस ने ''महिमा'' जोड़ा। इसका अर्थ यह हो सकता है कि परमेश्वर ने इस्राएलियों की महिमा दी जब उसने उन्हें अपने विशेष लोग होने के लिए चुना। अधिक सम्भावना यह है कि अपने लोगों के बीच में परमेश्वर की उपस्थिति की महिमा है। इसके लिए इब्रानी शब्द *shekinah* है। परमेश्वर की महिमा बादल के खम्भे में और आग के खम्भे में दिखाई दी थी, जो जंगल में इस्राएलियों की अगुआई करता था (देखें निर्गमन 13:21)। जब तम्बू बनाया गया था तो यहोवा की महिमा से वह ढांचा भर गया था (निर्गमन 40:34), और यही बात मन्दिर का निर्माण पूरा होने के बाद हुई थी (1 राजाओं 8:10, 11)। इस प्रकार केवल इस्राएल को महिमा दी गई थी।

(4) *''वाचाएं।''*चौथी बात ''वाचाएं'' थी।[13] परमेश्वर ने उनके पूर्वज अब्राहम से (उत्पत्ति 17:1-8; देखें 12:1-3; 22:18) और एक जाति के रूप में यहूदियों से सीनै पर्वत पर एक और वाचा बान्धी थी (निर्गमन 24:8; देखें 20:1-17)। और वाचाएं बान्धी गई थीं, जिनमें राजा दाऊद के साथ बान्धी गई एक वाचा थी (2 शमुएल 23:5; देखें 7:12)। इन सभी वाचाओं में केवल इस्राएल जाति ही सम्मिलित थी।

(5) *''व्यवस्था।''*फिर पौलुस ने ''व्यवस्था के दिए जाने'' की बात की। जैसा कि पहले कहा गया है, पौलुस परमेश्वर के वचनों (प्रकाशन) के दिए जाने को यहूदियों के लिए बहुत बड़ी चीज़ मानता था (3:1, 2)। यहूदियों के अलावा परमेश्वर की व्यवस्था *लिखित में* किसी और के पास नहीं थी। परन्तु अध्याय 9 में पौलुस की सूची में उसने ''व्यवस्था का *दिया जाना*'' भी जोड़ा। इस अवसर की कल्पना करें, वह दिन जब लोगों ने देखा था कि ''बादल गरजने और बिजली चमकने लगी, और पर्वत पर काली घटा छा गई, फिर नरसिंगे का बड़ा भारी शब्द हुआ, और छावनी में जितने लोग थे, सब कांप उठे'' और ''समस्त पर्वत धुएं से भर गया; और उसका धुआं ज़ोरदार ढंग से उठ रहा था, और समस्त पर्वत बहुत कांप रहा था'' (निर्गमन 19:16, 18)। इससे शानदार और प्रभावित करने वाले दृश्य की कल्पना करना कठिन होगा और यह दृश्य विशेष रूप से इस्राएल से जुड़ा था।

(6) *''उपासना।''* यहूदियों को मिलने वाली आशिषों में पौलुस ने ''उपासना'' भी जोड़ी। अंग्रेजी अनुवादों में ''मन्दिर'' शब्द को इटेलिक किया जाना, इस बात का संकेत है कि इसे अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया था; परन्तु अनुवादित शब्द ''उपासना'' *latreia* से लिया गया है, जिसका इस्तेमाल परमेश्वर की आराधना सहित उसकी सेवा के लिए किया जाता है।[14] यहां ज़ोर उस पहुंच पर है, जिसे परमेश्वर ने स्वयं सम्भव बनाया। परमेश्वर ने इस्राएलियों को तम्बू में और बाद में मन्दिर में उस तक पहुंचने के ढंग विस्तार से बताए थे। केवल इस्राएलियों को ही बताया

गया था कि किस प्रकार परमेश्वर से सम्पर्क करना है यानी उससे आशिषें मांगनी हैं और उसकी दया पानी है।

(7) *''प्रतिज्ञाएं।''* आयत 4 ''प्रतिज्ञाएं'' शब्द के साथ समाप्त होती है। पुराना नियम परमेश्वर के लोगों के साथ प्रतिज्ञाओं से भरा पड़ा है, परन्तु सबसे महत्वपूर्ण प्रतिज्ञाएं आने वाले मसीहा की हैं। केवल इस्राएलियों को ही ये प्रतिज्ञाएं दी गई थीं।

(8) *''पुरखे।''* आयत 5 का आरम्भ आठवीं आशीष के साथ होता है। ''पुरखे [*pateres*] भी उन्हीं के हैं।'' मूल पिता/पुरखे अब्राहम, इसहाक और याकूब थे; परन्तु यहूदियों ने इस श्रेणी में पुराने नियम के और प्रसिद्ध लोगों को जोड़ लिया था, जैसे मूसा और दाऊद। यहूदियों का अपनी विरासत पर गर्व करना उचित था।

(9) *''मसीह।''* इस्राएल को मिलने वाला अन्तिम (और सबसे महत्वपूर्ण) लाभ आयत 5 के दूसरे भाग में बताया गया है: ''मसीह [मसीहा] भी शरीर के भाव से उन्हीं में से हुआ। ...'' एक जाति को अलग करने का परमेश्वर का मुख्य उद्देश्य लोगों को तैयार करना था, जिनके द्वारा मसीहा (मसीह) ने आना था। यह इस्राएल के अन्तर का सबसे बड़ा चिह्न था; किसी और जाति को इस प्रकार सम्मान नहीं दिया गया था।

पौलुस ने ''शरीर के भाव से'' अभिव्यक्ति का इस्तेमाल किया, क्योंकि यीशु का शारीरिक (मानवीय) पहलू उसकी यहूदी वंशावली से था (देखें रोमियों 1:2-4; मत्ती 1:1-25)। यीशु का आत्मिक (ईश्वरीय) पहलू स्वर्ग से था (देखें लूका 1:26-35)।

प्रेरित ने ''जिनसे मसीह *होगा*'' नहीं कहा, क्योंकि मसीह (यीशु) पहले ही आ चुका था। कई यहूदी जिन्होंने यीशु को मसीहा नहीं माना है, आज भी मसीहा के आने के लिए प्रार्थना कर रहे हैं। गैरल्ड आर. क्रैग ने लिखा है, ''अन्धा होना खतरनाक है, परन्तु अपनी विरासत की शानदार महिमा से अन्धा होना, ऐसी त्रासदी है, जिसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता।''[15]

इस्राएलियों पर परमेश्वर की आशिषों का और विशेषकर यीशु की आशीष का ध्यान करते हुए पौलुस भावुक हो गया और उसे प्रभु की महिमा के लिए रुकना पड़ा: ''... मसीह ... जो सब के ऊपर परम परमेश्वर युगानुयुग धन्य है। आमीन'' (रोमियों 9:5ख, ग)। यह गुणगान (महिमा की बात) पहले मानता है कि यीशु ''सबके ऊपर'' है। इस पृथ्वी को छोड़ने से थोड़ी देर पहले यीशु ने अपने चेलों से कहा, ''स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है'' (मत्ती 28:18)। अपने ऊपर उठाए जाने के बाद वह परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठ गया (मरकुस 16:19), जहां से इस समय वह राज कर रहा है (देखें 1 कुरिन्थियों 15:25)।

इस गुणगान में आगे ''परमेश्वर युगानुयुग धन्य'' शब्द हैं। मूलत: इसका अर्थ है ''अनादि काल से धन्य परमेश्वर'' (NKJV)। क्योंकि आरम्भिक मूल लेखों में व्याकरण पर ध्यान नहीं दिया गया, इसलिए हम यह पक्का नहीं कह सकते कि ''सबके ऊपर'' के बाद अर्धविराम या पूर्ण विराम होना चाहिए। यदि इस वाक्यांश के बाद अर्ध विराम लगता है (जैसे कि NASB, KJV, NIV तथा अन्य कई अनुवादों में है) तो ''परमेश्वर युगानुयुग धन्य'' यीशु के लिए कहा गया है। यदि इसके बाद पूर्ण विराम आता है (NCV; देखें NEB) तो आयत 5 के अन्तिम शब्द परमेश्वर के लिए लागू होते हैं।

कम से कम दो कारणों से मेरा मानना है कि ''परमेश्वर युगानुयुग धन्य'' का इस्तेमाल यीशु

के परमेश्वर होने को दिखाता है। पहले तो आरम्भिक मसीही लेखक इन शब्दों का इस्तेमाल मसीह के लिए करते थे। दूसरा ''शरीर के भाव'' से वाक्य में कुछ संतुलन बनाना आवश्यक है: ''शरीर के भाव से'' यीशु एक इस्राएली था, परन्तु ''आत्मा के भाव से'' वह ''परमेश्वर [जो] युगानुयुग धन्य [है]।'' यदि ''सबके ऊपर'' के बाद पूर्ण विराम लग भी जाए तौ भी पौलुस के मन में परमेश्वर पुत्र ही होगा।

वाल्टर एच. वैसल ने रोमियों 9:5 को ''[NIV] को सही मानते हुए, पूरे [नये नियम] में यीशु मसीह के परमेश्वर होने के स्पष्ट वाक्यों में से एक'' कहा है।[16] मू ने लिखा है, ''विषय जटिल है, परन्तु वाक्य रचना और संदर्भ दोनों ही अर्ध विराम का पक्ष लेते हैं। इसलिए यह आयत नये नियम की उन आयतों में गिने जाने के योग्य है, जो स्पष्ट तौर पर यीशु को 'परमेश्वर' कहती हैं।''[17]

परमेश्वर की सम्प्रभुता (आयतें 6-13)

यह दावा करने के बाद कि वह यहूदियों का मित्र है, शत्रु नहीं, पौलुस ने ''यूहदी समस्या'' की अपनी चर्चा शुरू की। आयत 6क के शब्दों को रोमियों 9-11 का विषय कथन कहा गया है: ''परन्तु यह नहीं, कि परमेश्वर का वचन टल गया।'' पौलुस यहूदियों की ऐसी आपत्ति का पूर्वानुमान लगा रहा था: ''तूने अभी-अभी अपने लोगों के साथ की गई परमेश्वर की वाचाओं और हमें दी गई प्रतिज्ञाओं की बात की, तौ भी अपने पत्र के द्वारा तू यह ज़ोर देता है कि धर्मी ठहराए जाने के लिए यीशु में विश्वास लाना आवश्यक है। अधिकतर यहूदी यीशु को मसीहा *नहीं* मानते, इसलिए तू यही कह रहा है कि परमेश्वर हमारे साथ अपनी वाचाओं और हमारे साथ अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा नहीं कर पाया।''

पौलुस ने फुर्ती से यह इनकार किया कि परमेश्वर का वचन नाकारा हो गया है। यह नाकारा नहीं हुआ था, उसने कहा, ''इसलिए कि जो इस्राएल के वंश हैं, वे सब इस्राएली नहीं'' (आयत 6ख)। अंग्रेजी बाइबल NASB में ''वंश'' के लिए शब्द *''descended''* को यह संकेत देते हुए इटेलिक किया गया है कि इसे अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया था। मूल धर्मशास्त्र में है ''वे सब इस्राएली नहीं हैं, जो इस्राएल [के] से हैं'' (देखें KJV)। दो चक्रों पर विचार करें, जिनमें बड़े चक्र के अन्दर एक छोटा चक्र है।[18] ये दोनों ''इस्राएल'' हैं; परन्तु बड़ा चक्र उन सब लोगों को दर्शाता है, जो इस्राएल (याकूब) के सांसारिक वंश हैं जबकि छोटा चक्र उन लोगों का है, जिन्हें हम ''असली इस्राएल'' का नाम दे सकते हैं। (इस चर्चा में आगे पौलुस ने उन्हें ''बाकी'' कहा [9:27; 11:5]।)

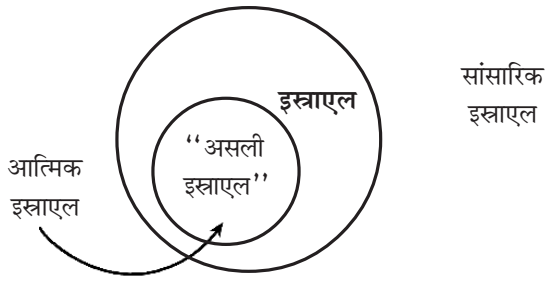

छोटे चक्र वाले लोग इस्राएल (याकूब) के सांसारिक वंश हैं, परन्तु वे यीशु में भी विश्वास रखते हैं। अध्याय 2 में पौलुस ने कहा था कि ''वह यहूदी नहीं, जो प्रकट में यहूदी है; और न वह खतना है, जो प्रकट में है, और देह में है। ... पर यहूदी वही है, जो मन में है'' (आयतें 28, 29क)। अध्याय 2 वाला ''असली यहूदी'' और अध्याय 9 वाला ''असली इस्राएल'' उन कुछ यहूदियों के लिए इस्तेमाल किया गया है, जिन्होंने मसीहा के रूप में यीशु को स्वीकार करके यहूदी कौम के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा किया था।

रोमियों 2:28, 29 और 9:6ख जैसी बातें अधिकतर यूहदियों के लिए चौंकाने वाली रही होंगी। उनका मानना था कि अब्राहम, इसहाक और याकूब का उनके पूर्वज होना ही उनके अनन्त उद्धार को सुनिश्चित करने के लिए काफी है। यह दिखाने के लिए कि ऐसा कुछ नहीं है, पौलुस ने अपने पाठकों को कालांतर में की गई परमेश्वर की दो पसन्दों का स्मरण कराया।

(1) *परमेश्वर ने इसहाक को चुना (आयतें 7-9)।* पौलुस ने पहले यह साबित किया कि अब्राहम की सांसारिक सन्तान होना ही काफी नहीं है: ''न अब्राहम के वंश होने के कारण सब उस की सन्तान ठहरे, परन्तु (लिखा है) कि इसहाक ही से तेरा वंश कहलाएगा'' (9:7)। हाजरा के पुत्र इश्माएल (उत्पत्ति 16:15) सहित अब्राहम के कई बच्चे थे (देखें उत्पत्ति 25:1, 2)। तौ भी उसके बच्चों में से केवल *एक* को ही अब्राहम को दी गई मूल प्रतिज्ञाओं के लिए परमेश्वर द्वारा चुना गया था। रोमियों 9:7 का उद्धरण उत्पत्ति 21:12 से लिया गया है, जहां परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, ''जो तेरा वंश कहलाएगा, वह इसहाक ही से चलेगा।''

पौलुस ने आगे कहा, ''अर्थात शरीर की सन्तान परमेश्वर की सन्तान नहीं, परन्तु प्रतिज्ञा के सन्तान वंश गिने जाते हैं'' (रोमियों 9:8)। ''शरीर की सन्तान'' इसहाक और इश्माएल की सन्तान (अरबी लोग) सहित कतूरा के बच्चों के वंश (मिद्यानी और अन्य) के द्वारा अब्राहम की कई शारीरिक सन्तानों के लिए इस्तेमाल किया गया है। परन्तु परमेश्वर ने उसके बच्चों यानी अब्राहम के असली वंश के रूप में ''प्रतिज्ञा के सन्तान'' (इसहाक के द्वारा) को ही स्वीकार किया।

''प्रतिज्ञा के सन्तान'' यहां उन बच्चों को कहा गया है, जो प्रतिज्ञा के कारण हुए थे। वह प्रतिज्ञा क्या थी? पौलुस ने कहा, ''क्योंकि प्रतिज्ञा का वचन यह है, कि मैं इस समय के अनुसार आऊंगा, और सारा के पुत्र होगा'' (आयत 9)। परमेश्वर ने अब्राहम को यह प्रतिज्ञा तब दी थी, जब वह निन्यानवे वर्ष का और सारा नब्बे या इससे अधिक वर्ष की थी: ''मैं बसन्त ऋतु में निश्चय तेरे पास फिर आऊंगा; और तब तेरी पत्नी सारा के एक पुत्र उत्पन्न होगा'' (उत्पत्ति 18:10)। एक साल बाद परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की (21:1-3) और इसहाक का जन्म हुआ था।

इस विचार के साथ पौलुस कहां जा रहा था। जब उसने यह ध्यान दिलाया कि परमेश्वर ने इश्माएल और इसहाक के बीच पसन्द रखी थी तो कोई शक नहीं कि यहूदी इस बात से सहमत हो गए थे कि परमेश्वर को ऐसा करने का अधिकार था और उसने सही निर्णय लिया था। पौलुस इस निष्कर्ष पर ला रहा था कि *परमेश्वर होने के कारण परमेश्वर को ऐसी पसन्द चुनने का अधिकार है और उसकी पसन्द हमेशा सही होती है। इसलिए उसे यह निर्णय लेने का अधिकार है कि सांसारिक इस्राएल में किसे ''असली इस्राएल'' मानना है।*

(2) *परमेश्वर ने याकूब को चुना (आयतें 10-13)।* और प्रमाण के लिए कि पुरखाओं के सांसारिक वंश होना काफी नहीं था, पौलुस इसहाक के पुत्रों की अगली पीढ़ी तक चला गया:

> और केवल यही नहीं, परन्तु जब रिबका भी एक से अर्थात हमारे पिता इसहाक से गर्भवती थी। और अभी तक न तो बालक जन्मे थे, और न उन्होंने कुछ भला या बुरा किया था कि उस ने कहा, कि जेठा छुटके का दास होगा। इसलिए कि परमेश्वर की मंशा जो उसके चुन लेने[19] के अनुसार है, कर्मों के कारण नहीं, परन्तु बुलाने वाले पर बनी रहे। जैसा लिखा है, कि मैं ने याकूब से प्रेम किया, परन्तु एसाव को अप्रिय जाना (रोमियों 9:10-13)।

पौलुस यह साबित करना चाहता था कि परमेश्वर को यह अधिकार है कि वह जिसे चाहे चुन सकता है। परमेश्वर के लिए ''सम्प्रभु'' शब्द लागू करने पर इसका अर्थ उसके पूरे अधिकार के रूप में होता है, जिस पर कोई सवाल नहीं उठा सकता। पिछले उदाहरण (इश्माएल की जगह इसहाक को चुनने के) के सम्बन्ध में यह तर्क दिया जा सकता है कि परमेश्वर ने इश्माएल के बजाय इसहाक को इसलिए चुना क्योंकि इसहाक इश्माएल से अधिक परमेश्वर का भय मानने वाला व्यक्ति था। इस उदाहरण में (एसाव की जगह याकूब को चुनने के) इन जुड़वां बच्चों के पैदा होने से *पहले* परमेश्वर की पसन्द का पता चलता है, इसलिए प्राप्ति, भलाई और यहां तक कि क्षमता को कहीं नहीं गिना गया।[20] आपको यह कहानी याद ही होगी:[21] रिबका जुड़वां बच्चों से गर्भवती ही थी, जब परमेश्वर ने उसे बताया, ''तेरे गर्भ में दो जातियां हैं, और तेरी कोख से निकलते ही दो राज्य के लोग अलग-अलग होंगे, और एक राज्य के लोग दूसरे से अधिक सामर्थी होंगे और बड़ा बेटा छोटे के अधीन होगा'' (उत्पत्ति 25:23)। कुछ देर बाद जुड़वां पैदा हुए, जिनमें पहले एसाव और फिर याकूब का जन्म हुआ (उत्पत्ति 25:24-26)।

कई लोग रोमियों 9:12 की इस बात पर अचम्भित होते हैं कि ''जेठा छोटे का दास होगा,'' क्योंकि ऐसा कोई प्रमाण नहीं है कि एसाव ने याकूब की कभी सेवा की हो। वास्तव में उत्पत्ति 33:8ख के अनुसार एसाव को ''प्रभु'' कहकर याकूब ने ही आस्था दिखाई थी। उत्पत्ति 25 का पूरा वाक्य मामले को साफ कर देता है, क्योंकि रिबका को बताया गया था, ''तेरे गर्भ में *दो जातियां* हैं, और तेरी कोख से निकलते ही दो राज्य के *लोग* अलग-अलग होंगे, और एक राज्य के लोग दूसरे से अधिक सामर्थी होंगे और बड़ा [यानी, बड़े बच्चे की सन्तान] बेटा छोटे [बच्चे की सन्तान] के अधीन होगा'' (आयत 23)। अब यह इतिहास है कि एसाव की सन्तान (अदोमियों) ने याकूब की सन्तान (राजा दाऊद के अधीन इस्राएलियों) की सेवा की (देखें 2 शमुएल 8:14)।

उत्पत्ति 25:23 इतनी *व्यक्तिगत* भविष्यवाणी नहीं थी, जितनी कि *राष्ट्रीय* भविष्यवाणी। रोमियों 9:13 के उद्धरण से इस निष्कर्ष पर फिर से ज़ोर दिया गया है: ''जैसा लिखा है, कि मैं ने याकूब से प्रेम किया, परन्तु एसाव को अप्रिय जाना।'' यह उद्धरण मलाकी 1:2, 3 से लिया गया है, जिसमें लिखा है:

> यहोवा यह कहता है, मैंने तुम से प्रेम किया है, परन्तु तुम पूछते हो, तू ने किस बात में हम से प्रेम किया है? यहोवा की यह वाणी है, क्या एसाव याकूब का भाई न था? तौ भी मैं ने याकूब से प्रेम किया, परन्तु एसाव को अप्रिय जानकर उसके पहाड़ों को उजाड़ डाला, और उसकी पैतृक भूमि को जंगल के गीदड़ों का स्थान बना दिया है।

परमेश्वर एक जाति के रूप में इस्राएल से बात कर रहा था और संदर्भ इस बात को स्पष्ट कर

देता है कि एसाव को यहां जाति के रूप में अदोम के लिए इस्तेमाल किया गया था (आयत 4)।

कई लोग ''एसाव को अप्रिय'' जानने की बात से अचम्भित होते हैं। बाइबल में कई बार ''अप्रिय'' शब्द का इस्तेमाल ''कम प्रेम'' करने के अर्थ में होता है (लूका 14:26 से तुलना करें)। AB में रोमियों 9:13 के बाद अप्रिय के लिए ''hated'' शब्द के बाद व्याख्यात्मक वाक्यांश ''held in relative disregard in comparison with my feeling for Jacob'' दिया गया है। रोमियों 9 में पौलुस के उद्देश्य के सम्बन्ध में आयत 13 के हवाले को इस प्रकार लिखा जा सकता है, ''याकूब को मैंने चुना, परन्तु एसाव को नकारा है।''

रोमियों 9:1-13 की दो पसन्दों का सम्बन्ध *सेवा* से है न कि *उद्धार* से। लियोन मौरिस ने लिखा है, ''अपने पत्र के इस पूरे भाग में पौलुस इस्राएल को व्यक्तियों के रूप में नहीं बल्कि पूर्णतया लेते हुए और अनन्त उद्धार के बजाय सेवा के लिए चुनने की बात कर रहा प्रतीत होता है।''[22] मौरिस ने फिर कहा, ''मन में अनन्त उद्धार न होकर विशेष अधिकार देने का चयन है।''[23] *परमेश्वर ने यह पसन्द चुनी कि अपने ईश्वरीय उद्देश्य को पूरा करने के लिए वह किसका इस्तेमाल करेगा, परन्तु इससे न चुने गए लोगों का अनादि भविष्य प्रभावित नहीं होगा।* जे.डी.थॉमस की क्लास में रोमियों 9:11-24 पर जब मैंने पेपर लिखा,[24] तो मेरे पेपर के नीचे उन्होंने जोड़ दिया, ''अनादि नहीं, अस्थायी चयन।''

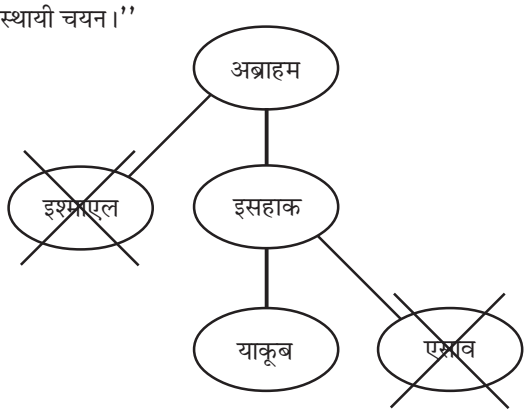

कैल्विनवादी लोग बहुत देर से प्रमाण के रूप में इस आयत का इस्तेमाल करते आ रहे हैं, परन्तु जो वे सिखाना चाहते हैं, वह यह आयत नहीं सिखाना चाहती।

हमारे वचन पाठ में लहू की रेखा स्थापित करते हुए जिसके द्वारा मसीहा ने आना था, परमेश्वर की दो पसन्दों को दिखाया गया है। परमेश्वर ने इश्माएल की जगह इसहाक को चुना। फिर एसाव और याकूब के मामले में परमेश्वर ने बड़े की जगह छोटे को चुना। पौलुस ने संकेत दिया कि परमेश्वर को ये पसन्दें चुनने का अधिकार था, क्योंकि वह परमेश्वर है। वह सम्प्रभु है और उसे सर्वोच्च अधिकार है। कोई यहूदी इस पर बहस नहीं कर सकता था। यहूदियों के लिए जो बात चौंकाने वाली थी वह यह थी कि पौलुस ने यह *उन* पर लागू की थी! *यदि परमेश्वर को इसहाक को चुनने और इश्माएल को रद्द करने का अधिकार था, यदि उसे याकूब को चुनने और एसाव को रद्द करने का अधिकार था तो उसे कुछ इस्राएलियों को चुनने और कइयों को रद्द करने का अधिकार था।* परमेश्वर की सम्प्रभुता की

शिक्षा वह दो धारी तलवार थी, जो दोनों ओर से काटती है।

महत्वपूर्ण सच्चाइयां (9:1-13)

9:14–29 पर अगले पाठ में हम पौलुस की इस सोच के साथ फिर शुरू करेंगे। खत्म करने से पहले हमें यह देखने के लिए कि उनमें इक्कीसवीं शताब्दी की कौन सी सच्चाइयां हैं, हमें पहली सदी की समस्या पर उसकी शिक्षा को देखना चाहिए।[25]

खोए हुओं की चिन्ता करें (आयतें 1–3)

यहूदियों से घृणा करने का पौलुस के पास हर कारण था। लगभग हर नगर में जहां वह गया था, उसके साथ उन्होंने दुर्व्यवहार किया था। तौ भी यह सोचकर कि जब तक वे यीशु को ग्रहण नहीं करते वे रोमियों 8 में वर्णित आशिषों को कभी पा नहीं सकेंगे, उसका मन दु:खी था। बेशक पौलुस को ऐसे खतरनाक अनुभव हुए थे, जिनकी हम कल्पना कर सकते हैं, परन्तु कहीं भी उसने खोए हुए लोगों पर विचार करने पर इतना गहरा दु:ख नहीं जताया। मेरे और आपके इर्द–गिर्द ऐसे लोग हैं, जो यदि विश्वास करके प्रभु की आज्ञा नहीं मानते तो अनन्तकाल के लिए नाश हो जाएंगे। उनमें से कुछ तो हमारे ''शारीरिक भाई–बहन'' हो सकते हैं। हमें भी उनके लिए अपने मनों में ''बड़ा शोक और दु:ख करना'' आवश्यक है।

कुछ अच्छा कहें (आयतें 4, 5)

पौलुस के पत्रों के आरम्भ को देखें तो आप पाएंगे कि आमतौर पर उसने लोगों की समस्याओं से निपटने से पहले उनके बारे में कुछ अच्छा कहा। जवान प्रचारक (बूढ़े भी) पौलुस के नमूने से सीख सकते हैं। हम में से हर किसी को दूसरों के साथ अपने सम्बन्धों में सकारात्मकता की तलाश करनी चाहिए।

अवसरों को बर्बाद किया जा सकता है (आयतें 4, 5)

यहूदियों को प्रभु द्वारा कई विशेष आशिषें दी गई थीं, परन्तु उन्होंने उन आशिषों का लाभ नहीं उठाया था। उन्होंने अवसरों को बर्बाद कर दिया था और एक अवसर गंवाने का अर्थ सदा के लिए उसे खो देना है। इफिसियों 5:16 में पौलुस ने सब मसीही लोगों से आग्रह किया कि ''अवसर को बहुमूल्य समझो [हर अवसर को खरीद लो], क्योंकि दिन बुरे हैं'' (AB)। उन सब अवसरों पर विचार करें, जो परमेश्वर हमें देता है,[26] विशेषकर उन आत्मिक अवसरों पर। यदि हम उन्हें गंवा दें, तो कितना बुरा होगा!

उद्धार व्यक्तिगत है (आयतें 6ख, 7क)

यहूदियों को लगता था कि उनका उद्धार केवल इसी आधार पर हो जाएगा कि वे अब्राहम की शारीरिक सन्तान हैं, परन्तु ऐसा कुछ नहीं था। यीशु ने एक बार यहूदियों को बताया था ''अपने–अपने मन में यह न सोचो, कि हमारा पिता अब्राहम है; क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि परमेश्वर इन पत्थरों से इब्राहीम के लिए संतान उत्पन्न कर सकता है'' (लूका 3:8)। आज कइयों

के मन में है कि परमेश्वर का भय मानने वाले मसीही माता-पिता के कारण वे मसीही बन जाएंगे। ऐसा नहीं है। आप माता-पिता या उनके माता-पिता से उद्धार विरासत में नहीं पा सकते, यह व्यक्तिगत मामला है। आपको प्रभु को *व्यक्तिगत रूप से* मानना और उसकी इच्छा पूरी करनी पड़ेगी (यूहन्ना 8:24; लूका 13:3; मरकुस 16:16)।

परमेश्वर तो परमेश्वर है (आयतें 11, 12)

शायद रोमियों 9 में पाया जाने वाला सबसे महत्वपूर्ण सत्य यह है कि परमेश्वर तो परमेश्वर है और वह जो चाहे कर सकता है,[27] केवल इसलिए कि वह परमेश्वर है। परमेश्वर की इस विशेषता के लिए धर्मशास्त्रीय शब्द ''सम्प्रभुता'' है। हम में से कई लोग मनुष्यजाति की स्वतन्त्र इच्छा पर सिखाने के लिए अधिक समय और परमेश्वर की सम्प्रभुता पर कम समय बिताते हैं। परमेश्वर द्वारा उनके जन्म से पहले एसाव की जगह याकूब को चुनने के सम्बन्ध में यह सुझाव दिया जा सकता है कि परमेश्वर भविष्य में देख सकता था और उसे मालूम था कि उसके उद्देश्यों के लिए एसाव के बजाय याकूब बेहतर पात्र होगा। यह सच हो सकता है, परन्तु पौलुस का कहने का अर्थ यह था कि याकूब हो या एसाव कोई एक की जगह दूसरे को चुनने के लिए जन्म के बाद परमेश्वर को *बाध्य* नहीं कर सका। परमेश्वर तो परमेश्वर है और इस कारण वह किसी के अधीन नहीं है! आइए हम परमेश्वर के रूप में उसका आदर करना सीखें।

बहुत कुछ है जिसका हमें कभी पता नहीं चल सकता

और नहीं तो 9 से 11 अध्यायों जैसे रोमियों की पुस्तक के कठिन भागों से हमें प्रभावित होना चाहिए कि परमेश्वर और उसके उद्देश्यों के बारे में ऐसा बहुत कुछ है जिसे हम कभी जान नहीं सकते। हम में से कइयों को परमेश्वर के बारे में सब कुछ जानना अच्छा लगता है। हम उस सब को लिखकर एक डिब्बे में रखकर उसके ऊपर एक रिबन लगा देंगे, परन्तु परमेश्वर एक डिब्बे में नहीं आएगा। मूसा ने लिखा था, ''गुप्त बातें हमारे परमेश्वर यहोवा के वश में हैं; परन्तु जो प्रकट की गई हैं, वे सदा के लिए हमारे और हमारे वश में रहेंगी, इसलिए कि इस व्यवस्था की सब बातें पूरी हो जाएं'' (व्यवस्थाविवरण 29:29)। हम परमेश्वर का धन्यवाद करें कि परमेश्वर ने हम पर *कुछ* बातें प्रकट की थीं। आइए हम उसका अध्ययन करके उन्हें मानें, जो उसने प्रकट किया था, परन्तु यह भी समझ लें कि उसने *सब* कुछ प्रकट नहीं किया है। रोमियों की पुस्तक हमें दीन बनाने के लिए काफी होनी चाहिए।

परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करेगा (आयत 6क)

मैंने कई बार कहा है कि रोमियों 9-11 में पौलुस पहली सदी की समस्या की बात कर रहा था। इस समस्या को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है: ''क्या परमेश्वर यहूदी जाति को दी गई प्रतिज्ञाओं को पूरा करेगा?'' यह प्रश्न पहली सदी से सम्बन्धित हो सकता है, परन्तु इक्कीसवीं सदी के लिए इसमें गम्भीर अर्थ हैं कि क्या परमेश्वर *हमारे* साथ की गई प्रतिज्ञाओं को पूरा करेगा? अगले पाठों में हम देखेंगे कि पौलुस इस प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास करता है, परन्तु उसका निष्कर्ष हमारे वचन पाठ की आयत 6 में पहले ही बता दिया गया था: ''परन्तु यह नहीं, कि परमेश्वर का वचन टल गया।'' ध्यान से सुनें: हमारे लिए परमेश्वर का वचन नाकाम *नहीं* होगा!

परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं को *पूरा* करेगा। यह वह सच्चाई है जिस पर आप अपना जीवन आधारित कर सकते हैं।

सारांश

हमारा अगला पाठ रोमियों 9:14 से आरम्भ होगा। इस पाठ को मैं अभी बताई सच्चाइयों से जुड़े कुछ सुझावों के साथ समाप्त करता हूं। पहले तो यह कि यदि आप मसीही नहीं हैं तो इस बात को समझ लें कि उद्धार व्यक्तिगत है। आपकी जगह कोई विश्वास करके, मन फिराकर बपतिस्मा नहीं ले सकता। यदि आपने अपना जीवन मसीह को नहीं दिया है, तो कृपया आज ही दे दें। दूसरा, यदि आप मसीही हैं, परन्तु आपने प्रभु द्वारा दिए गए आत्मिक अवसरों का लाभ नहीं उठाया है तो मेरी आपसे विनती है कि मन फिराकर बेहतर करने का निश्चय कर लें (प्रेरितों 8:22; 1 यूहन्ना 1:9)। यदि आपको अतीत के साथ निपटना आवश्यक है (देखें याकूब 5:16) तो आज ही आपके पास समय है (2 कुरिन्थियों 6:2)।

टिप्पणियां

[1]जिम मैक्गुइगन, *दि बुक ऑफ़ रोमन्स,* लुकिंग इनटू द बाइबल सीरीज़ (लब्बॉक, टैक्सस: मोनटैक्स पब्लिशिंग कं., 1982), 5. [2]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज़ फ़ॉर द वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1994), 261 में उद्धृत। जहां आप रहते हैं यदि वहां साहियां न पाई जाती हों तो तीखे कांटों वाले किसी और जानवर के बारे में बताएं। अमेरिका में हम ''कांटेदार जीव'' कह सकते हैं। [3]वही। [4]इसकी तुलना रोमियों 2:15 के वाक्य से करें। *रोमियों, 1* पुस्तक में ''अन्यजातियों, विवेक और मिशन कार्य (2:14, 15)'' पाठ में विवेक पर टिप्पणियां देखें। [5]''पवित्र आत्मा में'' इस तथ्य की पुष्टि भी हो सकती है कि पौलुस को पवित्र आत्मा की प्रेरणा थी। [6]ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले, *थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ़ दि न्यू टैस्टामेंट,* संपा. गरहर्ड किट्टल एण्ड गरहर्ड फ्रैडरिच, ट्रांस. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले, abr. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 57. जे. बेहम, ''*anathema.*'' [7]डग्लस जे. मू, *रोमन्स,* दि NIV एप्लीकेशन कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 2000), 292. कई विद्वान रोमियों 9:3 *anathema*, की परिभाषा को कम कठोर बनाते हैं, परन्तु अधिकतर का मानना है कि इस वचन के शब्द में अनन्तकाल के लिए खोए जाने की बात है। [8]यदि आपके सुनने वाले निर्गमन 32 वाली कहानी से परिचित नहीं हैं तो आप उन्हें वह कहानी फिर से बताएं। [9]परमेश्वर ने मूसा को बताया कि ''जिसने पाप किया है'' उसी को ज़िम्मेदार ठहराया जाना आवश्यक है (निर्गमन 32:33)। [10]यह टिप्पणी NASB वाली मेरी प्रति में मिलती है।

[11]वाल्टर डब्ल्यू. वैस्सल, नोट्स ऑन रोमन्स, *दि NIV स्टडी बाइबल,* संपा. केनथ बारकर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1985), 1719. [12]*रोमियों, 3* पुस्तक में ''पुत्र होने की आशीष (8:14-17)'' पाठ में गोद लेने पर टिप्पणियां देखें। [13]कुछ प्राचीन हस्तलेखों में केवल ''वाचा'' (एक वचन) है। यदि पौलुस के मन में केवल एक वाचा थी, तो यह सीनै पर्वत पर यहूदियों के साथ परमेश्वर द्वारा बांधी गई वाचा थी (देखें निर्गमन 24:8)। [14]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ. अंगर, एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोजिस्टरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 563. *Latreia* के बारे में हम अध्याय 12 के संदर्भ में और सीखेंगे। [15]*दि इंटरप्रीटर'स बाइबल* (नैशविल्ले: अबिंग्डन प्रैस, 1954), 9:540 में गरहर्ड आर. क्रेग, ''दि एपिस्टल टू द रोमन्स।'' [16]वैस्सल, 1719. [17]मू, 294. [18]रिचर्ड रोजर्स, *पेड इन फुल: ए कमैंट्री ऑन रोमन्स* (लब्बॉक, टैक्सस: सनसैट इंस्टीट्यूट प्रैस, 2002), 147. [19]''चुन लेने'' शब्द का अनुवाद *eklektos* से किया गया है, जिससे हमें चुनाव के लिए ''election'' शब्द मिला है, देखें KJV कैल्विनवादी धर्मशास्त्रियों ने ''चुनाव'' शब्द को अपनाकर इसे अपनी थियॉलोजी का मुख्य भाग बना लिया। ''चुनाव'' शब्द को

समझने का सबसे आसान ढंग ''election'' में पहले ''s'' जोड़ देना और ''चयन'' का विचार करना है। *रोमियों, 3* पुस्तक में ''एक उत्तर वाले तीन प्रश्न (8:31-37)'' पाठ में ''चयन'' पर टिप्पणियां देखें। [20]इसाव से बढ़कर याकूब को परमेश्वर द्वारा प्रसन्द करने की यह जानकारी KJV में कोष्ठक में दी गई है।

[21]पुराने नियम की उन सभी घटनाओं की तरह जिनकी पौलुस ने बात की, आप सुनने वालों के लिए जो इस घटना से अपरिचित हों, कहानी को संक्षेप में बता दें। [22]लियोन मौरिस, *दि एपिस्टल टू द रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 352. [23]वही, 356. [24]डेविड रोपर, ''रोमियों 9:11-24,'' जे.डी.थॉमस, *रोमन्स,* अबिलेन क्रिश्चियन कॉलेज (1955) के लिए नवम्बर 29 को दिया गया पेपर। [25]यह भाग जान-बूझकर छोटा रखा गया है। उसी प्रासंगिकता को चुनें, जो आपके सुनने वालों के लिए सबसे आवश्यक है और फिर उन्हें विस्तार दें। [26]हर क्षेत्र और यहां तक कि हर व्यक्ति को मिलने वाले अवसर अलग-अलग होते हैं। इसे जहां तक सम्भव हो व्यक्तिगत बनाएं। [27]अधिकतर सामान्य कथनों की तरह, इसमें कुछ गुण होना आवश्यक है: परमेश्वर जो चाहे कर सकता है *जब तक उसकी इच्छा और उसके स्वभाव से मेल खाता हो*। उस गुण पर ध्यान दिलाने के लिए विचार के प्रवाह को रोकने के लिए आपका इसके लिए अपनी समझ का इस्तेमाल करें।

रोमियों की पुस्तक की एक रूप रेखा

परिचय (1:1-17)

I. डॉक्ट्रिनल (1:18-8:39)
  क. दोषी ठहराना (1:18-3:20)
    1. अन्य जाति
    2. यहूदी
  ख. धर्मी ठहराना (3:21-5:21)
  ग. पवित्र ठहराना (6:1-7:25)
  घ. महिमा देना (8:1-39)

II. व्यावहारिक (9:1-15:13)
  क. व्याख्या (9:1-11:36)
    1. विश्वास से धर्मी ठहराया जाना इस्राएल को दी गई प्रतिज्ञाओं से मिलाया गया।
    2. विश्वास से धर्मी ठहराया जाना परमेश्वर की वफ़ादारी से मिलाया गया।
  ख. प्रासंगिकता (12:1-15:13)

सारांश (15:14-16:27)